thearyasamaj.org

वर्ष-११ अंक-६
ऋग्वेद २७ फरवरी २०१५
पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-15
एक प्रति- २०-०० रू. यजुर्वेद

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद अथर्ववेद

thearyasamaj.org

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-११ अंक-६

२७ फरवरी २०१५

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १,९७,२९,४९,११५

विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

संपादकीय	4
सन्ध्या की पुस्तक (सन्ध्योपासना)	8
ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	9
वेद वाणी	10
ऋषि दयानन्द की हिन्दी....	11
होली (कविता)	14
झूठ का त्याग – सौ सुख	17
स्वाध्याय की महिमा	19
आत्म साधना की अलौकिक...	22
मानव निर्माण का सूत्र : यम	24
समाचार	26

मार्च माह के पर्व, त्यौहार एवं जयंती

5	होलिका दहन
6	होली, नवशस्येष्ठी पर्व
8	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
15	विश्व उपभोक्ता दिवस
20	रानी अवंतीबाई लोधी बलिदान दिवस
21	गुड़ी पड़वा, नववर्ष प्रारंभ, चैत्र नवरात्र प्रारंभ डॉ. हेडगेवार जयंती, गौतम ऋषि जयंती
22	विश्व जल दिवस
23	भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव शहीद दिवस
24	गुरु हरगोविन्द पुण्यतिथि
25	गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस
27	सम्राट अशोक मौर्य जयंती

thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

सामाजिकता की सूखती हुई बेल–एक ज्वलन्त समस्या

इस शीर्षक को पढ़ने के पहले समाज से एक प्रश्न है – **क्या हम सामाजिक हैं ?**

इसलिए पहले यह जानना आवश्यक है कि समाज का अर्थ क्या है ? चौंकिए मत, जरा इस पर गंभीरता से विचार करें और फिर निर्णय करें। किसी वस्तु, व्यक्ति, जाति के संबंध में उसके प्रति निर्मित धारणा संख्या क़ी बहुतायत के आधार पर प्राप्त की जाती है। जैसे किसी टोकरी में बहुत से आम रखें हैं, उनमें से अधिकांश खट्टे हैं और कुछ मीठे भी हैं। मान लीजिए, खट्टे आमों का प्रतिशत 90% है और अच्छे मीठे आमों का प्रतिशत 10% है या और भी कम है, तो ऐसी स्थिति में आम की टोकरी के बारे में जब कोई पूछे, तो अपनी धारणा बताएगा कि टोकरी के आम खट्टे हैं। ठीक इसी प्रकार समाज के बारे में मूल्यांकन उसके अधिकांश व्यक्तियों की वर्तमान स्थिति को देखकर ही किया जाना चाहिए। अपवाद तो सभी जगह पाए जाते हैं, इस भीड़ में निश्चित ही कुछ ऐसे भी हैं जिनके जीवन में सामाजिक गुणवत्ता के महत्वपूर्ण तथ्य पाए जाते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी जो महामना समाज की गरिमा बनाए हुए हैं वास्तव में धन्य हैं, स्तुत्य हैं।

किन्तु आज विकृति से घिरे समाज का अधिकांश तपका जिस विचारधारा में लिप्त है यही समाज के मूल्यांकन की प्रमाणिकता का आधार मानना होगा।

शीर्षक को ठीक से समझने के लिए उसे दो प्रकार से समझना होगा। पहला सामाजिक कौन और दूसरा असामाजिक कौन ?

सामाजिक कौन है, इसे जानने के लिए समाज के प्रमुख लक्षणों को समझना होगा, वे कौन से कारण हैं, गुण हैं, आदर्श हैं जिनसे समाज का महत्व है। पहले इसी पर थोड़ा चिन्तन करते हैं।

विचार करने के पूर्व हमारे लिए यह भी जानना आवश्यक है कि समाज है क्या ? उत्तर साधारण सा है, मनुष्यों के समूह को समाज माना जाता हैं। जिसमें सभ्यता, संस्कार, सहयोग, संगठन हो, जो जीवन लक्ष्य से पूर्ण हो।

इस उत्तर में मनुष्य शब्द का प्रयोग किया है, जैसे माला का नाम मस्तिष्क में आते ही हमारी कल्पना में फूलों की या मोतियों का स्वरूप सामने आता है। जहां बहुत से फूल का मोती माला में पिरोए जाते हैं, वह माला कहलाती है। समाज की परिभाषा में भी मानव समूह को समाज कहते हैं। **समूह तो हो परन्तु मनुष्यों का हो।** पशु–पक्षी भी काफी संख्या में एक साथ देखे जाते हैं किन्तु उन्हें समाज की उपमा नहीं दी जाती है। मानवीय गुण विशेष के कारण मनुष्यों के समूह को ही समाज कहा जाता है, और यह ठीक भी है। गाय आदि पशुओं के झुण्ड को **समज** कहा जाता है। समज और समाज में यह अन्तर समझने योग्य है।

अब सोचना होगा समाज का सदस्य मनुष्य कौन और कैसा हो ?

thearyasamaj.org

क्या भौतिक रूप से दो हाथ, दो पैर, दो कान, दो ऑखें और जो सीधा होकर चले, उसे ही मनुष्य कहा जाना ठीक है ? यदि मनुष्य की यही परिभाषा माने तो फिर समाज को सतत क्षति पहुंचाने वाले, निर्मम हत्या करने वाले, चोर–डाकू, आतंकवादी, नक्सली, इन सबको भी मनुष्य ही कहना चाहिए। किन्तु सत्य तो यह है कि मानवता विहीन संख्या समाज कहलाने योग्य नहीं है। ऐसे व्यक्ति समाज के सदस्य कहलाने के अधिकारी भी नहीं हैं, जो दानवता का कार्य करते हुए, मानवता का चोला पहने हैं। ऐसी गलत वृत्तियों में संलग्न व्यक्तियों को मनुष्य कहना कोई भी ठीक नहीं समझता। बोलचाल की भाषा में जब कोई व्यक्ति किसी सामज विरोधी निन्दनीय कार्य में पाया जाता है तो यह कहते सुना जाता है, अरे, वो क्या आदमी है ? वो मनुष्य है क्या ? कोई आदमी ऐसा कार्य करता है क्या? अर्थात इस मानवीय चोले को ही मनुष्यता से जानना उचित नहीं है। एक उर्दू के शायर ने बहुत अच्छा लिखा है –

छिपे हैं जाने कितने जंगल बस्तियों के बीच।
आदमी तो आज शैतान के रूप में मिला है।।

जैसे कोई भवन है खाली है, जीवन प्रदान करने वाली सामग्री, अनाज, औषधि आदि और उसमें समाज को नष्ट करने वाली, नशीली सामग्री विध्वंशक वस्तुएं गोला–बारूद, शस्त्र, आर. डी. एक्स. कुछ भी रख सकते हैं। भवन तो दिया था परन्तु जिस प्रकार की सामग्री उसमें रखी, उसी से उसकी पहचान उसी अनुसार होगी। जो भवन समाज का रक्षक हो सकता है, वही भवन समाज का भक्षक भी हो सकता है। ठीक यही स्थिति इस मानव समाज की है, इसे जैसा बनाया जावेगा, उसी अनुसार इसकी पहचान होगी। इस मानव चोले में मानव–देवता–दानव कोई भी पाए जा सकते हैं। चोला तो साधन है, इसका स्वामी आत्मा है, स्वामी जैसे चाहे इस चोले का उपयोग कर सकता है। इस चोले की स्थिति का निर्धारण हमारी तामसी–राजसी–सात्विक प्रवृत्तियॉ करती है।

इसलिए वास्तव में सही अर्थों में जो मनुष्य है और वे जहां एकत्रित हैं उसे ही समाज कहना चाहिए। **एक और महत्वपूर्ण बात है। मनुष्य बनना पड़ता है, जन्म से मनुष्य पैदा हो गया यह विचार भ्रम है।**

संसार का सर्वप्रथम ज्ञान, सर्वप्रथम संस्कृति और ईश्वरीय ज्ञान वेद है। वेद की महत्ता को सनातन धर्म के अनेक ग्रंथों ने और दुनिया के हजारों चिन्तकों न, दार्शनिकों ने, जो विभिन्न जाति, सम्प्रदाय, देशों के हैं, उन्होंने वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है, क्योंकि वह ईश्वरीय ज्ञान है। वेद जैसा प्रमाण हमें उपलब्ध है तो उसी का उदाहरण देना अधिक महत्वपूर्ण होगा।

वेद के एक मन्त्र में कहा –

तुन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुमुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम्।।

– ऋ. 10/53/6

thearyasamaj.org

यह उपदेश मानव के लिए किया गया। संसार के ताने–बाने को बुनते हुए। अपने जीवन को सूर्य का गामी अर्थात सूर्य का अनुसरण करने वाला बनावें। ऐसा करके हम स्वयं मनुष्य बनें और दूसरों को भी मनुष्य बनावें।

ऊपर वेद मन्त्र में कहा जीवन की अपनी समस्याओं को, जवाबदारियों को, इच्छाओं को पूरा करते हुए भी सूर्य का अनुसरण करें। सूर्य का अनुसरण्ध करने का भाव यहां सूर्य के गुणों से है, सूर्य अन्धेरे का नाश कर सर्वत्र प्रकाश फैलाता है, सूर्य ऊर्जा प्रदान करता है, प्रातः उगते समय और ढ़लते समय एक जैसा वरूण रंग होता है, गन्दगी को नष्ट करता है, पानी बादलों का निर्माण करता है, अपनी किरणों से समुद्र के सारे पानी का वाष्पीकरण कर बादलों तक पहुंचाता है, जिससे अमुतरूपी बारिश के रूप में संसार के लिए पुनः प्राप्त हो जाता है। यह गुण मनुष्य्र के लिए वेद भगवान ने बनाए क्रमशः इसका तात्पर्य है हम अज्ञानरूपी अन्धेरे का नाश कर ज्ञानरूपी प्रकाश फैलावें। सूर्य के समान हमारा जीवन दूसरों को भी ऊर्जा प्रदान करे, जिस प्रकार अपनी किरणों से पदार्थों की गन्दगी, दुर्गन्ध सूर्य दूर कर देता है वैसा ही हमारा जीवन हो, हम भी अपनी आन्तरिक व बाहरी स्वच्छता बनाएं रखें। हम भी जहां कमजोरी दिखे, उसे दूर करें, खारे पानी को लेकर अमृत तुल्य जल जैसे सूर्य हमें दिलवाता है वैसे ही हम कटुता के व्यवहार को मधुरता में परिवर्तित कर दें, जैसे सूर्य प्रातः उगते और सायं ढ़लते दोनों समय वरूण रंग का होता है, वैसे ही हम जीवन में अति सुख व अति दुःख दोनों अवस्थाओं में एक जैसे गंभीर बने रहें।

मन्त्र का आगामी सन्देश हैं मन्त्र कहता है – **"मनुर्भव जनया दैव्यम जनम्"** ।

अर्थात् – ऐ दुनियां के लोगों तुम स्वयं मनुष्य बनो और जब स्वयं मनुष्य बन जावो तो अपने समान दूसरों को भी मनुष्य बनावों।

उपरोक्त विचारों को आत्मसात करने के उपरान्त मनुष्य का जीवन एक सामाजिक व आदर्श जीवन बन सकता है। ऐसा व्यक्ति ही अपने साथ–साथ वह परमार्थ की भावना का भी संयोजन करेगा, अपनी प्रगति के साथ दूसरों की भी प्रगति का विचार करेगा।

ये है एक सामाजिक विचारधारा का सही चित्रण, यही समाज के प्रत्येक सदस्य का आदर्श है। समाज रूपी बेल का पोषण इसी प्रकार की मानवीय भावनाओं से संभव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत ही सुन्दर विचार इस व्यवस्था पर दिए हैं – **"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"** समाजवाद की, सामाजिक उन्नति की इससे अच्छी सरल परिभाषा कहीं पढ़ने–सुनने को नहीं मिली।

जब वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालें, और चिन्तन कर सोचें कि, आज समाज की स्थिति क्या है ? तो पायेगें पद, पैसा, परिवार को महत्व देकर सामाजिक मूल्यों का

thearyasamaj.org

उपहास हो रहा है। हम अपनी प्रगति, उन्नति, समृद्धि से हटकर दूसरों के लिए कितना सोचते हैं, उनको ऊपर उठाने में हम क्या प्रयास करते हैं, कितना सहयोग करते हैं ? यह विचार शनैः–शनैः समाप्त होते जा रहा है।

जब इस प्रकार की प्रवृत्ति रहेगी तो आत्मा की आवाज सुनेगें तो वह कहेगी ये सब तो हम नहीं करते। प्रंश्न उठा यदि ये सब तो हम नहीं करते, तो फिर प्रश्न उठा, नहीं करते तो भी क्या सामाजिक हैं ? उत्तर हो सकता है, हमारा उत्तर – मौन हो, किन्तु सत्यता है, नहीं, सामाजिक नहीं है।

समाज आज हिंसक पशुओं से अधिक भयभीत मानव कृति से है। समाज को शोषित करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। ये धनबल, जनबल, कुर्सीबल से भले ही सामाजिक बने रहें किन्तु वास्तव में ये असामाजिक हैं, ऐसी प्रवृत्ति की उपेक्षा कर समाज को सावधान करना चाहिए, रक्षा करना चाहिए। अरे, समाज आपसी संगठन, सहयोग, एक–दूसरे के प्रति सद्‌भावना किसी के दुःख में दुःखी होना, किसी उन्नति में उसकी प्रसन्नता को बांटना, गिरे हुए को उठाना, अभाव में सहयोग देना आदि, विचारों की महत्वपूर्ण नींव पर बना है। ये उसके नियम हैं, उसके प्रत्येक सदस्य को सदस्य बने रहने के मापदण्ड हैं। जो इन सिद्धान्तों को नहीं मानता वह सामाजिक कहलाने का अधिकारी नहीं है, वह असामाजिक है।

मानवीय आदर्शों वाला ही समाज को व्यवस्थित रख सकता है, जिसके पास सामाजिक आदर्श नहीं व समाज को अव्यस्थित कर देता है, इसलिए उसे असामाजिक तत्व के नाम से पुकारा जाता है।

ऐसे असामाजिक तत्वों के कारण ही समाज पनप नहीं रहा है, शोषित है, भयभीत है, दुःखी है। समाज रूपी बेल इनके दुकर्मों से सूख रही है। जिस बेल में सुख, शान्ति, प्रसन्नता रूपी सुगन्धित पुष्प होना चाहिएं, उनका जीवन भय, दुःख, असुरक्षा, चिन्ता ने ले लिया।

विडम्बना है, समाज रूपी इमारत में चारों ओर से आग लग रही है, किन्तु इसमें रहने वाले बेखबर और गहरी नींद में सो रहे हैं।

शीर्षक की ओर पुनः ध्यान देवें समाज की बेल सूख रही है। आज आवश्यकता है उस सूखती हुई बेल को पुनः हरीभरी पल्लवित करने के लिए नैतिकता रूपी पानी की, संगठन–सौहाद्रता रूपी खाद की और दूषित विचारों से मुक्त वायु की। यदि ऐसा हुआ तो ही समाज सुरक्षित रहेगा अन्यथा **समाज और समज का** अन्तर मिट जावेगा।

....

thearyasamaj.org

सन्ध्या की पुस्तक (सन्ध्योपासना)

1. प्रश्न – जब महर्षि मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से विद्याध्ययन करने के बाद आगरा में रहे, तो उन्होंने सर्वप्रथम कौन–सी पुस्तक लिखी थी ?

उत्तर – मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से विद्या ग्रहण करके महर्षि ने जब आगरा में निवास किया, तो उन्होंने सर्वप्रथम "सन्ध्या" की पुस्तक लिखी।

2. प्रश्न – यह पुस्तक कौन से सन् में लिखी थी ?

उत्तर : आगरा में महर्षि संवत् 1920 (सन् 1863, अप्रेल–मई) से डेढ़ वर्ष तक रहे थे। (एक अन्य स्थान पर दो वर्ष रहने का उल्लेख भी मिलता है।) इसी अवधि में यह पुस्तक लिखी गई थी। **निश्चित समय का उल्लेख नहीं है।**

3. प्रश्न – इस पुस्तक में केवल सन्ध्या के मन्त्र थे अथवा कुछ अन्य विषय भी था ?

उत्तर : श्री पं. लेखराम जी द्वारा लिखित जीवन चरित में लिखा है – "स्वामी जी के उपदेश से एक सन्ध्या की पुस्तक, जिसके अन्त में **"लक्ष्मी सूक्त"** था, छपाई गई।

4. प्रश्न – उस समय इस पुस्तक के छपने में कितना खर्च हुआ था ?

उत्तर : उस समय इस पुस्तक की तीस हजार के लगभग कापियॉ छापी गई थीं, जिन पर **डेढ़ हजार रूपया व्यय** हुआ था।

5. प्रश्न – यह व्यय किसने किया था ?

उत्तर : यह व्यय आगरा के ही एक सज्जन **महाशय रूपलाल** ने किया था।

6. प्रश्न – इस पुस्तक का मूल्य क्या रखा गया था ?

उत्तर : पं. लेखराम जी के अनुसार, पुस्तक **एक आने मूल्य** पर बेची गई थी। जबकि पं. महेश प्रसाद जी के अनुसार, ये पुस्तकें मुफ्त बांटी गई थी। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के विचार में – "यह संभव है कि कुछ हजार प्रतियां बेची गई हों और कुछ मुफ्त बॉटी गई हों।

7. प्रश्न – यह पुस्तक कहॉ से छपी थी ?

उत्तर : पुस्तक आगरा के "ज्वाला प्रकाशन प्रेस" में छपी थी।

8. प्रश्न – महर्षि ने सर्वप्रथम यही पुस्तक क्यों लिखी ?

उत्तर : महर्षि ईश्वर–भक्ति पर विशेष बल देते थे, अतः उन्होंने अपनी रूचि के अनुसार सर्वप्रथम यही पुस्तक लिखी।

9. प्रश्न – क्या यह पुस्तक अब उपलब्ध है ?

उत्तर : नहीं, अब यह पुस्तक स्वतन्त्र रूप में उपलब्ध नहीं है।

thearyasamaj.org

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

1. प्रश्न – वेदों का भाष्य लिखने से पूर्व भूमिका के रूप में महर्षि ने कौन सा ग्रन्थ लिखा था ?

उत्तर : ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका।

2. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखने में महर्षि का उद्देश्य क्या था ?

उत्तर : महर्षि से पूर्व लिखे गये भाष्यों और टीकाओं से वेदों के विषयों में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैल गई थीं और उन पर जो मिथ्या दोषारोपण हो रहे थे, उनको दूर करना इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य था।

3. प्रश्न – इन भ्रान्तियों आदि को दूर करके महर्षि ने इस ग्रंथ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' द्वारा क्या प्रतिपादित किया है ?

उत्तर : वेद विषयक प्रचलित भ्रान्तियों का दूर करके महर्षि ने इस ग्रंथ द्वारा लोगों के समक्ष वेदों का सत्य अर्थ प्रकट करने का प्रयास किया, जिससे वेदों के वास्तविक और सनातन अर्थ को सब भलिभांति जान सकें।

4. प्रश्न – ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की रचना महर्षि ने कब की ?

उत्तर : महर्षि ने विक्रमी संवत् 1933, भाद्रमास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, रविवार के दिन (20 अगस्त सन् 1876) से इस ग्रंथ की रचना प्रारंभ की और इसकी समाप्ति संवत् 1933 मार्गशीष के लगभग प्रथम सप्ताह (पौने तीन माह) में हुई।

5. प्रश्न – इस ग्रंथ में कितने अध्याय हैं और अध्याय को क्या नाम दिया गया है?

उत्तर : इस ग्रंथ में 57 अध्याय हैं। अध्याय को विषय नाम दिया गया है।

6. प्रश्न – यह ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया है ?

उत्तर : मूलतः संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसके साथ–साथ हिन्दी भाषा में अनुवाद भी प्रस्तुत है।

7. प्रश्न – इसमें प्रतिपादित कुछ विषयों का नाम बता सकते हैं ?

उत्तर : ईश्वर प्रार्थना विषय, वेदोत्पत्ति विषय, वेदों का नित्यत्व विषय, विज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, सृष्टि विद्या, गणित विद्या, प्रार्थना–याचना–समर्पण, मुक्ति, नौविमानादि विद्या, वैद्यकशास्त्रमूलविषय, पुर्नजन्म, विवाह, राजप्रजाधर्म विषय आदि।

– कु. कंचन आर्या

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

वेद वाणी

तदवै राष्ट्रमा स्त्रवति, नावं भिन्नामिवोदकम्।
ब्राह्मण यत्र हिसन्ति, तद् राष्ट्रं हन्ति दुच्छना।।
ऋषि–मयोभुः। देवता–ब्रह्मगवी/छंद अनुष्टुप

5 - 19 8

अथर्ववेद –

काण्ड सूक्त मन्त्र

(यत्र) जहॉ (ब्रह्माण) ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण की (हिंसन्ति) हिंसा करते हैं (तत्) वह (राष्ट्र) राष्ट्र (वै) निश्चय ही (अस्त्रवति) चू जाता है। (तत) उस (राष्ट्र) राष्ट्रं की (दुच्छना) दुर्गति (हन्ति) नष्ट – भ्रष्ट राष्ट्र को कर देती है। (इव) जैसे (भिन्ना) फूटी हुई छिद्र वाली (नावं) को (उदक) पानी नष्ट–भ्रष्ट कर देता है।

है राजन्। क्या तुम सोचते हो कि ब्राह्मण की हिंसा कर लोगे, उसकी वाणी की उपेक्षा कर दोगे। उसके परामर्शों को ठुकरा दोगे ? भले ही तुम ब्राह्मण को अपमानित कर लो, उसे कारागार में कैद कर दो। उस पर न बोलने के अध्यादेश जारी कर दो, उसे कोड़ों की मार लगवा दो, पर उससे तुम्हें कुछ उपलब्धि होने वाली नहीं है।

याद रखो–जिस राष्ट्र में ब्राह्मण का अनादर होता है वह राष्ट्र चू जाता है, उस राष्ट्र का वर्चस्व चू जाता है। उस राष्ट्र का वैभव प्रताप और प्रभाव चू जाता है। बड़े–बड़े राज्य जिनकी विश्व में धाक थी वे विद्वान ब्राह्मणों का तिरस्कार करने मात्र से प्रभावहीन हो गए।

ब्राह्मण का तिरस्कार व्यक्ति का तिरस्कार नहीं अपितु ज्ञान और विवेक का, सुमति का, धर्म का, ब्रह्मवर्चस का, कर्तव्य का, दूरदर्शिता का तिरस्कार है। जैसे फूटी नौका को नदी का पानी नष्ट कर देता है, ऐसे ही जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की हिंसा होती है उस राष्ट्र को दुःख एवं दुर्गति नष्ट कर देती हैं ब्राह्मण से निकलने वाली संपदा राष्ट्र की दिव्य संपदा है, उससे राष्ट्र को वंचित किया गया तो राष्ट्र खोखला हो जाएगा क्षात्र धर्म और ब्राह्मण धर्म एक साथ मिलकर राष्ट्र का उत्थान कर सकते हैं।

अतः ब्राह्मण–सम्मान राष्ट्र की महती आवश्यकता है इसलिए है राष्ट्र के कर्णधारों ! ब्राह्मण की विद्या वैभव की धर्मनिष्ठा की, आध्यात्मिकता, आस्तिकता की राष्ट्र में प्राण प्रतिष्ठा करो जो गुण कर्मनिष्ठा अनुसार ब्राह्मण है उनके परामर्श का आदर करो। उन्हें ऊँचा पद दो, ऊँचा आसन दो, इससे राष्ट्र अपने गौरवमय अतीत को अर्जित करेगा। ब्रह्मज्ञान की दिव्य पताका को ऊँचे से ऊँचे फहराऍगा।

प्रस्तोता : राजेन्द्र व्यास, उज्जैन

thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन
हिन्दी गद्य निर्माताओं में विशिष्ट स्थान

हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण संबंधी संघर्ष के इस काल में हिन्दी रंगमंच पर दो महामानवों (भारतेन्दु हरिशचन्द्र तथा ऋषि दयानन्द) का प्रवेश हुआ, जिनकी हिन्दी सेवा अविस्मरणीय है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का पिता और युग प्रवर्तक माना गया तथा हिन्दी गद्य का निर्माता भी, किन्तु ऋषि दयानन्द ने हिन्दी के लिए जो कार्य किया उस दृष्टि से हिन्दी साहित्य के लेखकों ने उन्हें प्रमुखता नहीं दी भारतेन्दु हरिशचन्द्र से ऋषि दयानन्द का कार्य कम नहीं था, अपितु अनेक अर्थों में अधिक ही था। भारतेन्दु जी की मातृभाषा हिन्दी थी और वे साहित्य जगत के ही व्यक्ति थे। उनका उद्देश्य वेद का प्रचार था और इसी उद्देश्य पूर्ति में उनकी साहित्य साधना भी होती चली गई और इसी में वे हिन्दी को नया स्वरूप भी दे गये। हिन्दी भाषा में वेदों का भाष्य एक युगान्तकारी घटना है। हिन्दी भाषा व साहित्य को ऋषि दयानन्द का अपूर्व योगदान निम्नलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट है –

1. ऋषि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म एवं दर्शन जैसे गूढ़तम विषयों को हिन्दी गद्य में प्रस्तुत कर दिखाया।

2. ऋषि दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी भाषा भाषियों के लिए सुलभ कर दिया। लाला लाजपतराय तो इसे उनके जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं साहसिक कार्य बताते हैं।

3. हिन्दी गद्य में खण्डन–मण्डनात्मक साहित्य का सृजन सर्वप्रथम उन्होंने ही किया।

4. अपने समय में हिन्दी भाषा में सर्वाधिक व्याख्यान उन्होंने ही दियं।

5. हिन्दी भाषा में व्याख्यान द्वारा पूरे देश में सर्वप्रथम प्रचार किया।

6. आर्य समाज द्वारा संगठित रूप से हिन्दी प्रचार पर बल दिया।

7. भारतेन्दु युग में ऋषि दयानन्द ने ही हिन्दी के भारतीयकरण की ओर ध्यान दिया। यद्यपि भारतेन्दुजी ने हिन्दी गद्य को विकसित व सुसंस्कृत किया, किन्तु उनका क्षेत्र कथा तथा नाटक–साहित्य तक सीमित था। दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक व अन्य गंभीर विषयों के सुचारू रूप से प्रतिपादन के लिए ऋषि दयानन्द ने जिस परिमार्जित हिन्दी का प्रयोक किया और जिस सशक्त व सुसंस्कृत शैली को अपनाया, वह वस्तुतः एक नई चीज थी। उन्होंने हिन्दी की गद्यशैली को प्रौढ़ता प्रदान की।

8. ऋषि दयानन्द ने भारतीय भाषाओं के मूलस्त्रोत संस्कृत का महत्व समझकर अपने ग्रन्थों में सरल तत्सम शब्दों के चयन की नीति अपनाई जबकि भारतेन्दु हरिशचन्द्र का झुकाव तद्भव शब्दों की ओर था। आज हिन्दी भाषा का विकास ऋषि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा के अनुसार हो रहा है। इस

thearyasamaj.org

दृष्टि से हिन्दी के स्वरूप को साहित्यिक स्तर और स्थिरता प्रदान करने में स्वामी दयानन्द का प्रमुख हाथ है।

9. हिन्दी में शास्त्रीय पद्धति से समीक्षा और व्याख्या करने की पद्धति का आरम्भ ऋषि दयानन्द द्वारा हुआ। श्री कृष्णकुमार कौशिक ने भारतेन्दु व ऋषि दयानन्द की हिन्दी सेवाओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि – "यदि साहित्य, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि विधाओं का श्रीगणेश भारतेन्दु पद्धति से समीक्षा और व्याख्या करने की पद्धति का आरम्भ स्वामी जी और उनके युग के लेखकों के द्वारा हुआ।"

इतना ही नहीं, ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित "आत्मकथा" अपने समय की खड़ी बोली के मानक स्वरूप तथा गद्य लेखकर का आदर्श प्रस्तुत करती है। यह हिन्दी में प्रकाशित सर्वप्रथम आत्मकथा है। उनका पत्र साहित्य हिन्दी जगत का पहला प्रकाशित पत्र संग्रह माना गया है। इस पत्र संग्रह से ही हिन्दी में पत्र साहित्य की विधिवत परम्परा का शुभारम्भ हुआ। सत्यार्थप्रकाश को तो आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के प्रस्थानिक बिन्दु के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द के बहुसंख्यक ग्रंथ हिन्दी में हैं। इन ग्रंथों के गद्य को यदि एक स्थान पर एकत्र करके देखा जाए तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इतना अधिक हिन्दी गद्य उन्नीसवीं शताब्दी के किसी अन्य साहित्यकार द्वारा नहीं लिखा गया। उनके ग्रंथों में ऐसे सन्दर्भ में हैं जिन्हें ललित साहित्य के अन्तर्गत माना जा सकता है। उनके इस गद्य साहित्य में व्यंग्य विनोद से आप्लावित एक नयी शैली विकसित हुई है, भाषा में निखार आया और वह प्राणवन्त बनी। निश्चय ही ऋषि दयानन्द का स्थान हिन्दी गद्य के निर्माताओं में सुरक्षित है। प्रो. प्रकाश ने ऋषि दयानन्द के हिन्दी कार्य की चर्चा करते हुए लिखा है – "महर्षि की विशिष्ट हिन्दी थी, उनकी अपनी ही लेखन शैली थी। उन्होंने न जाने कितने नये शब्द हिन्दी को प्रदान किये थे और कितने पुराने शब्दों का नये सन्दर्भ में प्रयोग किया था। उनकी हिन्दी परिमार्जित है। हिन्दी के परिमार्जन का यदि इतिहास लिखा जाए तो उसमें महर्षि के योगदान की चर्चा अवश्य होगी।

वस्तुतः राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्थापना और प्रचार तथा उसे उत्कृष्ट कोटि के ज्ञान–विज्ञान की भाषा के पद पर आरूढ़ करने में ऋषि दयानन्द का अनुपम योगदान है। उन्होंने अपने सांस्कृतिक, समाजसुधार एवं राष्ट्रीय कार्यों के द्वारा उसे एक गरिमा प्रदान की तथा तत्कालीन सर्जक साहित्यकार को प्रेरणा दी। यह प्रेरणा साहित्य की विविध विधाओं में सहज देखी जा सकती है। उनके भाषण लेखन से भारतेन्दु युग के सभी साहित्य मनीषियों को प्रेरणा मिली। उस समय के सभी साहित्यिकों की रचनाएं प्रायः समाज सुधार तथा राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है। ऋषि दयानन्द से पूर्व हिन्दी गद्य को प्रौढ़ता प्रदान की। डॉ. ग. तु. आष्टेकर ने लिखा है – "ऋषि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने इस महादेश में जहां

thearyasamaj.org

राष्ट्रीयत्व की भावना को सुदृढ़ किया, वहीं राष्ट्र को एक भाषा देने में भी अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई। हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित कराने के पीछे इनकी हिन्दी की सेवाओं का असाधारण योगदान रहा है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि ऋषि दयानन्द तथा उनके आन्दोलन ने इस देश की जनता को सशक्त जीवन दर्शन, अदम्य देशभक्ति और अभिव्यंजन शक्ति सम्पन्न राष्ट्रभाषा का वरदान देकर आधुनिकता के साथ सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित करने का उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न किया।"

सारांश – हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के पद पर पहुंचाने तथा उसे उच्चकोटि के विशाल लेखन द्वारा समर्थ भाषा बनाने के साथ–साथ ऋषि दयानन्द ने उसके साहित्यिक स्वरूप को भी सजाया एवं संवारा है। वास्तव में वे अपने समय के अतुलनीय साहित्यकार हैं। हिन्दी गद्य को ऋषि दयानन्द की देन के सन्दर्भ में श्री विष्णुप्रभाकर लिखते हैं कि – "निरन्तर भाषण देते–देते भाषा का प्रयोग करना पड़ा जो व्यंग्य विनोद से पूर्ण थी। वे मुहावरों का भी सटीक प्रयोग करते थे। इससे भाषा में रोचकता तो पैदा हो ही जाती थी, उसकी संरचना में भी एक ऐसी लचक, एक ऐसा लौच पैदा हो जाता था जो उसे अद्‌भुत रूप से प्राणवन्त और सम्प्रेषणीय बना देता था। मानना होगा कि स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को व्यंग्य विनोद से आप्लाविद एक नई शैली दी। भाषा को निखारा और प्राणवन्त बनाया। इसलिए उनका स्थान हिन्दी गद्य के निर्माताओं में सुरक्षित है।

– डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

साभार आर्य संकेत

स्वच्छता की आवश्यकता शारीरिक व मानसिक दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ईश्वर ने यह सुन्दर सृष्टि सबको सुख सुविधा प्रदान करने के लिए हमें दी। परन्तु हम प्रति क्षण उसकी इस सृष्टि को किसी न किसी रूप में प्रदूषित कर रहे हैं, गन्दा कर रहे हैं। हमारा यह कार्य ईश्वर की व्यवस्था, राष्ट्र, समाज व स्वयं अपने लिए अनुचित है। यह उस ईश्वर की दया का अनादर है।

ऐसा करके हम ठीक नहीं कर रहे हैं, इसी कारण आज तरह–तरह की नई–नई बीमारियों से हम जूझ रहे हैं। इन सबमें स्वास्थ, धन, समय और कभी – कभी समय से पहले मौत को निमन्त्रण दे देते हैं। इन सबके पीछे हम ही दोषी हैं।

तो आईए, आज से ही शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हम स्वच्छता को जीवन में विशेष ध्यान देवें। अपने निवास स्थान, दुकान, आफिस को तो स्वच्छ रखें। इसके अतिरिक्त रास्ते पर, घर के सामने, गली में, नाली में, कहीं भी गन्दगी हमारे कारण न फैले इसका भी विशेष ध्यान देवें। स्वयं सुखी रहें, दूसरों को सुखी रखें, यही मनुष्यता है। अपने सुख के लिए दूसरों का सुख छीनना पशुता, दानवता है।

अतः समाज के इस महत्वपूर्ण सन्देश को ध्यान में रखकर स्वयं स्वच्छता पर ध्यान देवें व दूसरों को भी प्रेरित करें।

thearyasamaj.org

होली

होली के अवसर पर,
एक भ्रष्ट मन्त्री के घर पर।
होली मनाते हुए,
रंग एक–दूसरे पर लगाते हुए।।

एक सज्जन लाल रंग लेकर,
मन्त्रीजी की ओर बढ़े।
तभी दूसरे सज्जन बोले, जो वहीं थे खड़े।

बोले क्यों ये नकली रंग लगाते हो,
असल पर नकल चढ़ाते नहीं शरमाते हो।
अरे! चुनावों में इन्होंने असली होली खेली थी,
न जाने कितनों ने इनकी गोली झेली थी।।

खून का दरिया बहाया है,
तब जाकर ये पद पाया है।
इसीलिए हमारे मन्त्री की लाल रंग पहचान है।
यही तो, इनकी शान है।।

तभी हरा रंग लगाने को,
होली रस्म मनाने को,
एक सज्जन आगे आए,
हाथ मन्त्रीजी की ओर बढ़ाएं।
तभी पी ए ने उसको टोका,
रंग लगाने से रोका।
पी ए ने कहा, भाई! हरे रंग का इनका,
सम्बन्ध पुराना है,
जानता इसे, सारा जमाना है।।

मन्त्रीजी को हरे रंग से, सख्त ऐलर्जी है,
फिर तुम, मानो न मानो तुम्हारी मर्जी है।

आदमी ने चिढ़कर कहा, भाई साहब
ऐसा क्या है, हरे रंग में।
मुझे लगता है आप,
झूम रहे भंग में।।

thearyasamaj.org

पी ए ने पांच साल पुरानी, उन्हें याद दिलाई,
वन मिनिस्ट्री के वन काण्ड की बात बताई।

कुर्सी पर बैठते ही जंगलों की,
इन्होने मिटा दी थी हरियाली।
जंगल नष्ट बताने को,
कागज बनवाए थे जाली।।

ये प्रश्न विधान सभा में उठा था,
हर शख्स इनसे रूठा था।

इसलिए, इनको पद छोड़ भारी कीमत चुकाना पड़ी।
हरियाली के कारण ही ये मुसीबत हुई थी खड़ी।।
इसलिए जब–जब, हरा रंग सामने आता है।
इनका अतीत, इन्हें सताता है।।

इतनी बात सुन, रंग केशरिया, शीशी में लिए,
एक और सज्जन, उस ओर बढ़े,
जहां मन्त्रीजी,
चमचों से थे घिरे खड़े।

इस बार मन्त्रीजी खुद बोले,
कृपया, ये रंग हम पर न ढ़ोलें।
ये साम्प्रदायिकता की निशानी है,
हमें अपनी सीट नहीं गंवानी है।।

ये रंग हम पर जैसे ही आएगा,
हमारे मतदाता का परसेन्ट घट जाएगा।
बदनाम हो जायेगें, साम्प्रदायिक कहलायेगें।
पार्टी हाईकमान रूठ जाएगी,
हो सकता है, अगला उम्मीदवार ही न बनाएगी।।

इसलिए कृपया केशरिया रंग न डालें,
और कोई रंग चाहे जितना लगालें।

इतना सुनते ही एक नवयुवक,
कीचड़ और काला रंग लेकर आया,
महफिल में एकाएक, सन्नाटा छाया।

thearyasamaj.org

सभी उसकी ओर देख रहे थे,
मीडिया वाले अपनी रोटी सेक रहे थे।
कुछ भले आदमियों ने, इसका विरोध किया,
कुछ ने युवक व मन्त्रीजी के बीच अवरोध किया।।
पर, युवक बड़ा साहसी व बुद्धिमान था,
मन्त्री के चरित्र का उसके पास प्रमाण था।
बोला, भाईयों ! मैं दोनों चीज जो,
अपने साथ लाया हूं।
मन्त्रीजी के निकट की हैं,
ये जान पाया हूं।।

इन दोनों से मन्त्रीजी का पुराना नाता है।
ये, इतिहास हमें बताता है।।

कीचड़ उछालना दूसरों पर खूब जानते हैं,
मास्टर माईण्ड है षड़यन्त्र के, आप भी मानते हैं।
इन पर वर्षों से कीचड़ उछल रहा है,
आज मैं डालूं तो क्या बुरा हुआ है।।

सत्ता की आड़ और कुर्सी के दम पर,
अत्याचार करते रहे, सदा हम पर।
न जाने क्या–क्या कुकर्म किए,
शैतान के रूप में ही ये जिए।।

महकते बाग को विरान बना डाला,
इसलिए इनके मुताबिक है रंग काला।

वैसे इनके मुंह पर तो, पहले से कालिख लगी है।
क्योंकि हर बुराई, इनकी सगी है।।

इसलिए मुझे अपना काम करने दो,
काला रंग, इसके मुह पर मलने दो।

मुंह क्या इसका तो तन मन सभी काला है
इसमें नहीं कोई झूठ है।
इसलिए कीचड़ और काला रंग ही
इनको करता सूट है।।

— **प्रकाश आर्य, महू**

thearyasamaj.org

बोधकथा –

झूठ का त्याग – सौ सुख

सेठ शंकर दयाल नगर के एक बहुत बड़े रईस थे। नगर में उनकी कई कोठियॉ थीं ज़हां लाखों का व्यापार होता था। सेठ जी दानी भी थे। उनके घर पर कोई आता तो खाली हाथ कभी न लौटता।

सेठजी का एक ही पुत्र था। सेठजी तथा सेठानी के लाड़–प्यार के कारण तथा बुरी संगत के कारण बिगड़ गया था। धन की कमी नहीं थी। शराब की लत लगी थी, फिर वेश्याओं के कोठे पर जाने की लत पड़ गई। ज्यों–ज्यों आयु बढ़ती गई वह बिगड़ता गया। सेठजी का समझाना व्यर्थ गया। सेठ जी उसकी बुरी आदतों के कारण अत्यन्त दुःखी थे।

एक दिन सेठजी के कुलगुरू नगर में आए और सेठजी के घर पर ठहरे। सेठजी ने उनका भारी स्वागत किया। गुरूजी सेठजी के स्वभाव को जानते थे। परन्तु उस दिन उन्हें अनुभव हुआ कि मन से सेठजी अत्यन्त दुःखी हैं। उन्होंने पूछ लिया "सेठ जी ! क्या बात है ? आप कुछ परेशान प्रतीत होते हैं ?"

सेठजी ने कहा "गुरूजी ! आपका कथन सत्य है। मैं लड़के की ओर से परेशान हूं। एक ही लड़का है। परन्तु एक तो वह शराब पीने लगा है तथा साथ ही वह वेश्याओं के पास कोठों पर जाने लगा है। उसको समझाने पर भी समझता नहीं। आप ही कोई रास्ता निकालिए।"

गुरूजी ने कुछ विचार किया और फिर कहा "अच्छा हम प्रयत्न करेगें।"

उस दिन लड़का दोपहर भोजन के लिए घर पर आया तो मॉ ने कहा "गुरूजी आए हैं। पहिले उनको भोजन कराओ। तुम्हारे पिताजी तो काम से गए हैं। तुम्हें स्वयं भोजन करना चाहिए।"

इतने संस्कार अभी लड़के में शेष थे। गुरूजी के प्रति श्रद्धा बनी हुई थी। उसने हाथ धोए तथा थाल में भोजन लेकर गुरूजी के कमरे में जहां वह ठहरे हुए थे, जा पहुंचा और उनके सामने भोजन का थाल रख हाथ जोड़े प्रमाण कर बोला गुरूजी ! भोजन कीजिए।"

गुरूजी ने आशीर्वाद दिया और कहा, "बेटा ! हम भोजन नहीं करेगें।"

"गुरूजी ! क्यों ?"

"किसी को भोजन कराना अतिथि यज्ञ कहाता है। यज्ञ में पीछे दक्षिणा भी देनी पड़ती है। हमें भी दक्षिणा देनी पड़ेगी। हम भोजन उसी के हाथ से खाते हैं जो भोजन के पश्चात दक्षिणा दे।"

लड़के ने कहा "गुरूजी ! आप निश्चित होकर भोजन कीजिए। जो आप कहेगें वह दक्षिणा के रूप में दी जाएगी।"

"बेटा ! दक्षिणा वही होती है जो तुम अपने पास से दोगे। तुम्हारे पास तुम्हारा अपना क्या है ? यह धन–दौलत तो सब सेठजी का है न ?"

लड़का हैरान। क्या उत्तर दे ? गुरूजी ने पुनः कहा, "तुम्हारे पास तुम्हारा अपना जो है वह दो तो भोजन करूँगा।"

thearyasamaj.org

लड़के ने कहा "आप आज्ञा कीजिए। मेरा इस घर में कुछ भी तो नहीं। मैं क्या दे सकता हूँ ?"

गुरूजी मुस्कुराते हुए बोले, "हम जानते हैं तुम्हारे पास अपना क्या है।"

गुरूजी ! आज्ञा कीजिए। मेरा अपना जो भी मेरे पास है मैं सहर्ष दूंगा।"

"तो ठीक है। हमें अपना झूठ दान में दे दो। आज के पश्चात कभी झूठ नहीं बोलोगे। हमें यही वायदा करो। यही हमारी दक्षिणा होगी।"

गुरूजी ! मेरे झूठ से क्या बनेगा ?

"यह देखना हमारा काम है। हमें तुमसे यही चाहिए। बोलो देते हो तो भोजन करेगे अन्यथा हम आज भोजन नहीं करेगे।"

"गुरूजी ! आज के पश्चात मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा। यह मेरा वायदा है।"

"यह सोच लो, यदि झूठ बोलोगे तो घोर पाप के भागी बनोगे।"

"आप निश्चिन्त रहें। हम व्यापारी लोग हैं। एक बार जो वचन दिया वह हम निभाते हैं।"

गुरूजी ने भोजन किया और आशीर्वाद देकर चले गए।

अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार लड़का शाम को घूमने निकला तो शराब के ठेके पर जा पहुंचा। ठेके के बाहर व्यवसाय के एक परिचित अन्य सेठ मिल गए और पूछने लगे "छोटे सेठ इस ओर कैसे आना हुआ ?"

लड़का विचार करने लगा क्या उत्तर दूं। झूठ मैं बोलूंगा नहीं। गुरूजी से वाया किया है। यदि बोलता हूं तो घोर पाप का भागी बनता हूं और यदि मैंने सत्य कहा तो प्रतिष्ठा का प्रश्न खड़ा हो जाएगा।

सेठ ने पूछा "क्या बात है ? कहॉ जाना हो रहा है ? भई, यदि बताने की जगह नहीं तो न सही।"

लड़का लज्जित – सा घर को लौट गया।

स्वभाव वश रात्रि वह वेश्या के कोठे को जाने के लिए घर से निकला तो एक अन्य परिचित बाजार का व्यापारी मिल गया। उसने पूछ लिया, "छोटे सेठ ! इस समय कहां की तैयारी है ?"

लड़के के सामने फिर वही समस्या। झूठ वह बोलेगा नहीं और सत्य वहकह नहीं सकता था। परिवार की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। यदि उसने गुरूजी से वायदा न किया होता तो झूठ बोल देता।

उस परिचित व्यक्ति ने पुनः पूछा "क्या बात है छोटे सेठ, इस समय कहॉ चल दिए ? क्या बताने की जगह नहीं तो न सही।"

लज्जित सा लड़का घर को लौट गया।

अगले दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। आखिर लड़के ने बुराईयों को तिलांजलि दे दी। पारिवारिक संस्कारों से उसका झुकाव अब धर्म–कर्म की ओर होने लगा।

लड़के का पिता सेठ इतना प्रसन्न हुआ कि उसने दिल खोलकर अपना धन दान दक्षिणा में दे दिया।

thearyasamaj.org

स्वाध्याय की महिमा

ओ३म् सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वतीं दाशुषे वार्यं दात्।। ऋ. 10/17/7

अर्थ – दिव्य गुणों और दिव्यता के पुंज परमात्मा की प्राप्ति के इच्छुक विद्या की आराधना करते हैं। अध्वर – हिंसा रहित शुभ कर्मों के अनुष्ठान के लिए मनुष्य विद्या की उपासना करते हैं और अधिक से अधिक ज्ञानार्जन करते हैं। पुण्यात्मा सरस्वती को पुकारते हैं क्योंकि यह उन्हें पवित्र बना देती है जो विद्या के प्रति (सरस्वती के प्रति) समर्पित होते हैं, उनके पास कोई कमी नहीं रहती है।

उस दयालु परमात्मा ने मानव जीवन को श्रेष्ठतम बनाने के लिए मनुष्य को वेदों का खजाना दिया है। किन्तु यदि किसी को बहुमूल्य वस्तु दे दी जावे और उसको उस वस्तु की विशेषताऐं न बतायी जावें तो वह व्यक्ति उस प्राप्त वस्तु से यथावत लाभ नहीं उठा पाता है। परमात्मा ने वेद ज्ञान देने के साथ–साथ वेद ज्ञान की महिमा भी बतायी है। जिससे संसार के सभी मनुष्य लाभ ले सकें। वेद विद्या के द्वारा ही मनुष्य अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है। इसीलिए स्वाध्याय पर विशेष जोर दिया गया है। योगदर्शन में महर्षि पतंजलि लिखते हैं – **"स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः।"** योग. 2/44 स्वाध्याय से इष्ट देवता (विषय) का साक्षात् होता है। अर्थात् जिस पदार्थ को चाहते हो उसकी प्राप्ति हो जाती है, क्योंकि विद्या (सरस्वती) वह शक्ति है जिसके द्वारा सब पदार्थों के साथ साथ संसार का सर्वोच्च पद प्राप्त होता है।

"विद्यया अमृतमश्नुते" यजु. 40/14 विद्या द्वारा मनुष्य अमृत की प्राप्ति कर लेता है।

"स्वाध्यायान्माप्रमदः" स्वाध्याय में आलस्य मत करो। **"स्वाध्याय योग सम्पत्त्यापरमात्मा प्रकाशते।"** योग. 1/28 व्यासभाष्य स्वाध्याय और योग से परमात्मा का साक्षात्कार होता है। **"वेदाभ्यासाद भवेद विप्रो"** नित्य वेद शास्त्रों से स्वाध्याय से ही ब्राह्मणत्व प्राप्त होता है और स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण भी शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। स्वाध्याय से बुद्धि पवित्र हो जाती है। जिस प्रकार घर को साफ करने के लिए रोज झाड़ू लगानी पड़ती है, कपड़े साफ करने के लिए साबुन लगाना पड़ता है, उसी तरह मन की मैल को धोने के लिए नित्य स्वाध्याय की आवश्यकता है। स्वाध्याय का अर्थ केवल पुस्तक पढ़ना ही नहीं है, इस विषय में महर्षि वेद व्यास जी योग दर्शन में स्वाध्याय शब्द का अर्थ लिखते हैं **"स्वाध्यायः प्रणवादि पवित्राणां जपो मोक्ष शास्त्र अध्ययनं वा"** आसन पर स्थित होकर ओ३म् और गायत्री का ध्यानपूर्वक जप तथा मोक्षशास्त्र (वेद दर्शन, उपनिषद आदि) का अध्ययन और चिन्तन स्वाध्याय कहाता है। महाभाष्यकार पतंजलि मुनि लिखते

thearyasamaj.org

हैं **"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च"**। द्विज स्वाध्याय न करने पर धर्म से पतित हो जाता है अर्थात् जाति बहिष्कृत होता है। इसलिए नित्य श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्यायशील व्यक्ति को अनेकों उपाधियां प्राप्त हो जाती है। यथा – ब्रह्मचारी, ब्राह्मण, श्रोत्रिय, अनूचान, ऋषिकल्प, भ्रूण, ऋषि, देव आदि। अध्ययन से मनुष्य सर्वांगींण स्वास्थ्य प्राप्त कर लेता है शारीरिक और मानसिक बल मिलता है और आत्मा भी सशक्त हो जाता है। शतपथ ब्राह्मण के शब्दों में – **अपराधीनो अहरहरर्थान साधयते, सुखं स्वपिति, परम चिकित्सक भवति..............प्रज्ञा वर्धमाना.........यशोलोक पक्तिम्** । स्वाध्यायी व्यक्ति पराधीन नहीं रहता, दिन प्रतिदिन धन (भौतिक और आध्यात्मिक साधनों) की वृद्धि और प्राप्ति होती है। ऐश्वर्य मिलता है, सुख पूर्वक सोता है, स्वयं का सबसे बड़ा चिकित्सक बन जाता है। आज कल के अधिकांश चिकित्सक वास्तव में न तो स्वयं सदाचार रूपी स्वास्थ्य प्राप्त कर पाते हैं और न औरों को सदाचार की शिक्षा दे पाते हैं। स्वाध्यायी व्यक्ति की बुद्धि पवित्र होकर प्रज्ञा हो जाती है तथा वह संसार में यश को प्राप्त कर लेता है, सबके हृदयों में निवास करता है अर्थात् सबका प्रिय बन जाता है। स्वाध्यायी व्यक्ति ज्ञान अर्जित करके विद्वान बनता है और विद्वान की संसार पूजा (सम्मान) करता है, नीति शास्त्र के अनुसार –

नृपत्वं च विद्वत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।।

अर्थ – राजा से विद्वान की तुलना कभी नहीं की जा सकती, क्योंकि राजा तो अपने राज्य में ही पूजा जाता है किन्तु विद्वान संसार में हर जगह पूजा जाता है। इसलिए जैसे भोजन रोज खाते हैं, पानी रोज पीते हैं आदि वैसे ही स्वाध्याय भी नित्य आलस्य रहित होकर करना चाहिए। तभी दुःखों से छूटकर स्थिर सुख (आनन्द) की प्राप्ति हो सकती है। इत्योम्

– सुरेशचन्द्र शास्त्री
उपदेशक–म. भा. आ. प्रति. सभा
मोबाईल – **9165038356**

तीन उपयोगी बातें –

0 युवावस्था में बहुत कुछ करने का संकल्प करें।
0 वार्धक्य अवस्था में मुनिवृत्ति धारण करें।
0 मृत्यु के समय में धैर्य धारण करें।

प्रस्तोता – **राजेन्द्र व्यास, उज्जैन**

thearyasamaj.org

राष्ट्र में संस्कृत का स्थान

1. भारत सरकार	: सत्यमेव जयते
2. लोक सभा	: धर्मचक्रप्रवर्तनाय
3. उच्चतम न्यायालय भारत	: यतो धर्मस्ततो जयः
4. गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय	: ब्रह्मचर्येण तपसा देवा
5. ऑल इण्डिया रेडियो	: बहुजन हिताय
6. दूरदर्शन	: सत्यं शिवं सुन्दरम्
7. थल सेना (आर्मी)	: सेवा अस्माकं धर्मः
8. वायु सेना	: नभः स्पृशं दीप्तम्
9. जल सेना	: शं नः वरूणः
10. भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	: हव्याभिर्भगः सवितुर्वरेण्यं
11. भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी	: योगः कर्मसुकौशलम्
12. एन. सी. ई. आर. टी.	: विद्यायऽमृतमश्नुते
13. नेशनल कौन्सिल फॉर टीचर एज्यू.	: गुरूः गुरूतमोधाम
14. केन्द्रिय विद्यालय संगठन	: तत्वं पूषन्नपावृणु
15. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	: असतो मा सद्गमय
16. दिल्ली विश्वविद्यालय	: निष्ठा घृतिः सत्यम्
17. डाक तार विभाग	: अहर्निशं सेवामहे
18. भारतीय जीवन बीमा निगम	: योगक्षेमं वहाम्यहम्
19. श्रम मन्त्रालय	: श्रम एव जयते
20. गु.गो.सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय	: ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्
21. आर्य समाज	: कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
22. भारतीय तट रक्षक बल	: वयं रक्षाम्
23. हिन्दी अकादमी दिल्ली	: अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्
24. आर्य वीर दल	: अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
25. पंजाबी यूनिवर्सिटी	: तमसो मा ज्योतिर्गमय

thearyasamaj.org

विचार मंथन......

आत्म साधना की अलौकिक यात्रा है मौन

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से सम्पर्क का आधार है शब्द। शब्दों की इस अनन्त यात्रा में व्यक्ति–व्यक्ति से जुड़ता भी है और टूटता भी है। पर मौन की यात्रा स्वयं को जानने की यात्रा है, जिसमें केवल आनन्द ही आनन्द है।

प्रायः मौन का अर्थ न बोलना ही समझा जाता है। वास्तव में इसमें हाथ, ऑख व शरीर के अन्य अंगों से किए गए संकेतों का भी निषेध समाविष्ट है। मौन का अर्थ है बाह्य संवाद से पूर्णरूपेण परे होकर अन्तर से नाता जोड़ना। परमात्मा से सम्पर्क साधने का सेतु है मौन। निर्विचार, निर्विकार होकर स्वयं में लीन हो जाने की अलौकिक यात्रा का नाम है मौन। दिव्य शक्तियों को जागृत कर आत्मा के पावन दर्शन करने की प्रबल चेष्टा है मौन। मौन जीवन की बहुत बड़ी शक्ति है। बोलने से मनुष्य की शक्ति का व्यय होता है और मानसिक चिंतन बिखर जाता है। मौन से शक्ति चिंतन में लगी रहती है। मौनावस्था में मनुष्य ईश्वर प्रदत्त शक्तियों को पहचानता है, जिससे ज्ञान और ध्यान को नया आयाम मिलता है। धन से अधिक मूल्यवान है, शब्द शब्दों की कंजूसी मनुष्य को सुखी बनाने में सहायक है, जबकि धन का खर्च जीवन यापन के लिए अनिवार्य है। इसलिए शब्दों का विवेकपूर्ण उपयोग करना बुद्धिमत्ता है।

भाषण की सर्वोत्तम कला –

बोलना एक कला है तो नहीं बोलना अर्थात् मौन रहना भी एक कला है। जिसे बोलना नहीं आता, मौन से उसका यह दोष प्रकट नहीं होता। मौन भाषण की सर्वोत्तम कला है। साधु संतों की पहिचान और विद्वानों की शोभा है मौन। संसार में जो भी महान साधक, तत्व चिंतक, उत्कृष्ट साहित्य सर्जक हुए हैं, उनमें प्रायः सभी ने मौन की साधना की है। बिना मौन के ज्ञान में प्रखरता और वाणी में तेजस्विता नहीं आती है। मौन कर्मरूपी शत्रुओं से लड़ने का श्रेष्ठ शस्त्र है। हम मौन धारण करते हैं, परन्तु मौन का पूरा लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि मौन में हम निर्विचार नहीं होते और संकल्प विकल्प युक्त रहते हैं।

सम्यक दर्शन प्राप्ति का मार्ग –

सम्यक दर्शन आत्म–साधना का मूल आधार है, जिसका अर्थ है सत्य और स्वच्छ दृष्टि। मन की ऑख का निर्मल हो जाना और मन से संसार की आकांक्षा का निकल जाना, सम्यक दर्शन प्राप्त करने में मौन सीमेंट का काम करता है। मैं यह यात्रा करता रहता हूं, एक बार आप भी इस अलौकिक यात्रा पर निकल कर देखें तो सही, वाणी से सुगंध आ जाएगी। आकाश सी ऊंचाई और समुद्र सी गहराई आ जाएगी, जिसने भी यह यात्रा की, उसके चरणों में इन्द्र और देवत्व झुका है। शब्द जीवंत हो उठते हैं। देखा मौन की महिमा। हम सोचते रह जाते हैं और इस अलौकिक यात्रा का आनन्द नहीं उठा पाते। मौन आत्मा का स्वभाव है। महावीर ने

thearyasamaj.org

बारह वर्ष तक इसी पहचान के लिए मौन साधना की थी। यह साधना वाचाल लोगों को नई दृष्टि देगी। मधुर शब्द जाल के आकर्षण में फंसे मानव को निःशब्द के प्रति आकर्षित करेगी, हर गन्तव्यहीन को सही गन्तव्य का पता देगी, आत्म साधना की इस अनूठी यात्रा को किए बिना हम अन्तर की शान्ति को नहीं पा सकते।

संयम का पाठ –

मौन हमें संयम का पाठ पढ़ाता है। संयम से शक्ति का संचार होता है। जहां शरीर संयम से देह निरोग एवं दीर्घायु होती है, वहीं वाणी संयम हमारी दशा और दिशा ही बदल देता है। हम जीवन जीने की कला सीख कर निर्भय, निराकुल हो शाश्वत सुख को पाने की ओर अग्रसर हो जाते हैं। जीवन अन्तर्मुखी होकर आनन्द की रस धारा प्रवाहित करता है। मौन मन का विश्राम स्थल है और सकारात्मक चिंतन का केन्द्र बिन्दु है। हमारी कार्यक्षमता में गजब की तेजी आती है। सर्व कल्याण, सर्व उत्थान की भावना के भाव प्रबल होते हैं। अतः मौन की यात्रा सभी यात्राओं का संगम स्थल है। जिसने मौन साधना की अलौकिक यात्रा कर ली, उसे अन्य यात्राएं करने की जरूरत नहीं है। इसलिए वाणी को चुम्बकीय शक्ति प्रदान करने के लिए, जीवन को सरल और सरस बनाने के लिए अन्तर में निरन्तर रस की धारा बहाने के लिए, सुख, शान्ति और आनन्द का रसास्वादन करने के लिए, आओ हम अपने वचनरूपी अनमोल रत्नों को व्यर्थ में न लुटा कर मौन की अलौकिक यात्रा को करते रहने का पावन संकल्प लेकर जीवन को सार्थक बनाएं।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। समयावधि पूर्ण होने पर अपनी सहयोग राशि कृपया भेजें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

thearyasamaj.org

मानव निर्माण का सूत्र : यम

वर्तमान समय में योग के प्रति लोगों में लगाव पैदा हुआ है। वैदिक ऋषि स्वामी रामदेव की प्रेरणा व पुरूषार्थ तथा प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयास के पुलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को योग–दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है, जो कि एक सकारात्मक पहल है। सामान्य जन कुछ प्राणायाम तथा कुछ आसनों को करके यह समझता है कि वह योग क्रिया में पारंगत हो गया है। वास्तविकता तो यह है कि योग के आठ आंग हैं, जिसे अष्टांग योग कहा जाता है। आसन व प्राणायाम इसके मात्र दो आंग है। ?

यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यानसमाधयोऽष्टवंगनि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यम, नियम, आसन, प्राणायाम, योग दर्शन, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि – ये योग के आठ आंग है।

यम योग का प्रथम अंग हैं योग के प्रति श्रद्धा रखने वाले सज्जनों को यम के बारे में अवश्य जानना चाहिए। यम का क्षेत्र काफी विस्तृत है। यम के पालन से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का निश्चित ही कल्याण होता है। दूसरे शब्दों में यम का अन्य प्राणियों के साथ विस्तृत व्यवहार है। यम के पालन से व्यक्ति और समाज दोनों का निर्माण होता है। व्यक्ति के जीवन में नैतिकता आती है। यम का पालन न करने से व्यक्ति और समाज दोनों का चरित्र अशुद्ध हो जाता है। इसलिए व्यवहार को शुद्ध करने के लिए तथा ईश्वर प्राप्ति के लिए यम का श्रद्धापूर्वक आचरण करना चाहिए। यम का पालन करने से योग के अन्य अंगों का पालन करना सरल होता है। व्यवहार में शुद्धता आती है। शुद्ध व्यवहार से उपासना की शुद्धि होती है। शुद्ध उपासना होने से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। अतः व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए यम का आचरण आवश्यक है।

हमारे मनीषियों ने यम को इस प्रकार परिभाषित किया है –

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।

अर्थात् – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ये पांच यम हैं।

अहिंसा – सभी प्राणियों के साथ बैरभाव छोड़कर प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ही अहिंसा है। अहिंसा का पालन करने से व्यक्ति अपने दोषों को जानने और उसे दूर करने में समर्थ हो जाता है।

सत्य – जो वस्तु जैसा है, उसको वैसा ही जानना, मानना और आचरण में लाना सत्य है।

अस्तेय – मन, वाणी और शरीर से चोरी का परित्याग करके, उत्तम कार्यों में तन, मन, धन से सहायता करना अस्तेय है। केवल चोरी छोड़ देना ही अस्तेय नहीं है।

ब्रह्मचर्य – वेदों, उपनिषदों आदि को पढ़ना, ईश्वरोपासना करना और इन्द्रियों पर संयम करना ब्रह्मचर्य है।

अपरिग्रह – जो वस्तु और विचार ईश्वर प्राप्ति में बाधक हैं, उन सबका परित्याग और जो–जो वस्तु और विचार ईश्वर प्राप्ति में साधन हैं, उनका ग्रहण करना अपरिग्रह है।

thearyasamaj.org

इस प्रकार हम पाते हैं कि इन पांच यमों का पालन मनुष्य मात्र के लिए अतिआवश्यक है। ये पांच यम, मानव जीवन के उन्नति के पांच स्तंभ हैं, जो कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर सबके लिए समानरूप से कल्याणकारी हैं। इन यमों को जीवन में आत्मसात करने से मनुष्य का जीवन अहिंसक हो जाता है। सम्पूर्ण विश्व को वह बन्धुत्व की दृष्टि से देखता है। जीवन में सत्यता और नैतिकता के भाव का वर्धन होता है। अतः व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व विश्व के लिए यमों का पालन अति हितकारी एवं कल्याणकारी है।

सबसे बड़ी बात यह है कि यह विचार असंप्रयालिक है। संसार के हर व्यक्ति के लिए हैं तथा हर समय इसकी उपयोगिता एक श्रेष्ठ मानव और एक श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए सदैव रहेगी।

— गणेशसिंह,
आर्य समाज, महू

महर्षि कपिल

महर्षि कपिल के पिता कर्दम ऋषि थे। आपकी माता का नाम मनुपुत्री देवाहूति था। महर्षि कपिल का जन्म आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व का माना जाता है। आप महान तेजस्वी ऋर्षि थे। बौद्ध सम्प्रदायियों के अनुसार महर्षि कपिल गौतम ऋषि के वंशज थे। आपके मुख्य शिष्य का नाम आसुरी था। इसका प्रमाणस्वरूप श्लोक है –

पंचमः कपिलो नामसिद्धेशः काल विलुप्तम्। प्रोवाचासुरये सांख्यं तत्वग्रामविनिर्णयम्।। इसका अर्थ है – काल में विलुप्त हो गए सांख्यशास्त्र का उपदेश महर्षि कपिल ने ही सांख्य के सुप्रसिद्ध आचार्य आसुरि को दिया था। आचार्य आसुरि के शिष्य पंचशिख हुए। पंचशिख के पास से ऋषि जैगीश्रव्य ने शिष्यत्व ग्रहण किया था। आचार्यों ने सांख्यदर्शन का प्रचार–प्रसार किया। महर्षि कपिल के मूल ग्रंथ का नाम "षष्टितन्त्र" था। आपके शिष्य पंचशिख तथा वार्षगण्य ने इस ग्रंथ पर भाष्य लिखे और उसकी व्याख्या की।

सांख्य दर्शन में 527 सूत्र उपलब्ध हैं। सांख्य दर्शन के माध्यम से महर्षि कपिल ने प्रथम बार आत्मा, अनात्मा तथा भौतिकवाद के सूक्ष्म तत्वों का विस्तृत एवं गंभीर विवेचन प्रस्तुत किया। आपके मत में मूलभूत दो प्रकार के अनादि तत्व हैं। प्रकृति एवं पुरूष। पुरूष से आत्मा एवं परमात्मा दोनों का ग्रहण होने से मूलभूत अनादि तत्व तीन प्रकार के हुए। प्रकृति भी सत्व, रज एवं तम इन तीन गुणों के समुदाय का नाम है। प्रकृति से महत्तत्व, उससे अहंकार, अहंकार से 16 पदार्थ – 5 तन्मात्राएं तथा 11 इन्द्रियां उत्पन्न होती हैं। आगे पांच तन्मात्राओं से पांच स्थूलभूत उत्पन्न होते हैं। प्रकृति अनुत्पन्ना है। महत्तत्व से स्थूलभूतों की रचना को विकृति कहते हैं। पुरूष प्रकृति–विकृति से परे अर्थात् पृथक चेतन सत्ता है। जब पुरूष (जीवात्मा) को अपने स्वरूप का तथा पुरूष (परमात्मा) का ज्ञान होता है तब वह समस्त दुःखों एवं बन्धनों से मुक्त होकर मुक्ति सुख को भोगता है।

thearyasamaj.org

बौद्ध दर्शन असत् में से सत की उत्पत्ति मानता है। परन्तु सांख्य ने घोषित किया कि सत् से सत् की उत्पत्ति होती है। सत् कभी भी असत् नहीं हो सकता। आधुनिक विज्ञान का भी यही सूत्र है कि शून्य से तो शून्य ही उत्पन्न होगा। सत्तात्मक पदार्थ का कभी नाश नहीं होता।

महर्षि कपिल दार्शनिक होने के साथ–साथ वैज्ञानिक भी थे। आपने ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा निष्क्रिय ऊर्जाशक्ति की उपस्थिति की उपस्थिति को स्पष्ट किया। आपके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी मान्यता दी है।

समाचार –

आर्य समाज टी टी नगर में उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टी टी नगर, भोपाल में दिनांक 14 से 17 फरवरी 2015 तक वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 15/2/15 को एक शाम दयानन्द के नाम भजन संध्या और नवनिर्वाचित पार्षदों का तथा सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य का सम्मान आर्य समाज प्रधान श्री दलवीरसिंह राघव ने किया। श्री प्रकाश आर्य की अद्‌भुत भजन संध्या ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

तीनों दिवस प्रातः 9 से 11.30 बजे तक यज्ञ–भजन–प्रवचन एवं रात्रिकालीन 6 से 9 सत्र में व्याख्यान प्रवचन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विशेष रूप से स्वामी प्रभूवेशजी (औरैया उ. प्र.), रघुनाथ देव वैदिक भूषण (एटा), शशिकान्त त्रिपाठी (भोपाल) उपस्थित थे।

कार्यक्रम के यज्ञ ब्रह्मा, संचालन श्री आचार्य भद्रपालजी आर्य ने किया एवं आभार समाज के मन्त्री श्री जानकीमोहन जौहरी ने माना।

स्वाइन फ्लू की निःशुल्क दवा पिलाई

महू । आज स्वाइन फ्लू जैसी गंभीर बीमारी से पूरा देश परेशान हैं। इस परेशानी से छुटकारा पाने हेतु **आर्य सेवा संघ आर्य समाज महू** द्वारा निःशुल्क दवा कैम्प रविवार को प्रातः 10.30 से 2 बजे तक लगाया गया। दवाई का निःशुल्क वितरण डॉ. दिनेशचन्द्र आर्य, इन्दौर द्वारा किया गया। इस शिविर का लाभ 9500 व्यक्तियों ने लिया उन्हें स्वाइन फ्लू की दवा पिलाई गई।

इसी प्रकार **आर्य समाज महर्षि दयानन्दगंज, इन्दौर** द्वारा ऋषि बोध ोत्सव मनाया गया, काफी संख्या में उपस्थिति रही। इस अवसर पर आर्य परिवार के उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु बाहर से आए हुए छात्रों के रहने हेतु छात्रावास का शुभारंभ किया गया। इस समय छात्रावास में 4 विद्यार्थी निवासरत हैं। इसी अवसर पर लगभग 4500 व्यक्तियों को स्वाइन फ्लू की निःशुल्क दवा डॉ. दिनेशचन्द्र आर्य द्वारा पिलाई गई।

thearyasamaj.org

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना ■ सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

आर्य समाज

thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-71062